डार्विनवाद (Darwinism)

1. परिचय (Introduction):

डार्विनवाद (Darwinism) विकासवाद (Theory of Evolution) का एक वैज्ञानिक सिद्धांत है, जिसे चार्ल्स डार्विन (Charles Darwin) ने प्रस्तुत किया था।

उन्होंने अपने विचारों को 1859 ई. में प्रकाशित अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'On the Origin of Species by Means of Natural Selection' में विस्तार से बताया।

इस सिद्धांत के अनुसार, जीव-जगत में जो विविधता (diversity) और परिवर्तन दिखाई देते हैं, वे प्राकृतिक चयन (Natural Selection) की प्रक्रिया से उत्पन्न होते हैं।

2. डार्विन के अध्ययन का आधार (Basis of Darwin's Study):

डार्विन ने अपने H.M.S. Beagle नामक जहाज से विश्व भ्रमण (1831–1836) के दौरान विभिन्न स्थानों पर जीव-जंतुओं और पौधों का अध्ययन किया, विशेष रूप से गालापेगोस द्वीप (Galápagos Islands) में।

इन अध्ययनों से उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि जीव समय के साथ अपने वातावरण के अनुसार परिवर्तन करते हैं और वही जीव आगे चलकर नई प्रजातियों (species) में विकसित होते हैं।

3. डार्विनवाद के मुख्य सिद्धांत (Main Principles of Darwinism):

(i) भिन्नता (Variation):

प्रत्येक जीव समूह के सदस्यों में हल्का-फुल्का अंतर (variation) पाया जाता है।

ये भिन्नताएँ आनुवंशिक (hereditary) भी हो सकती हैं और पर्यावरण के कारण भी उत्पन्न होती हैं।

(ii) संघर्ष या प्रतिस्पर्धा (Struggle for Existence):
हर जीव को सीमित संसाधनों (खाद्य, स्थान, जल, आदि) के लिए अन्य जीवों से प्रतिस्पर्धा करनी पड़ती है।
यह संघर्ष तीन प्रकार का होता है —
समान प्रजाति के जीवों में (Intraspecific)
भिन्न प्रजातियों के बीच (Interspecific)
प्रकृति से (Environmental struggle)
(iii) योग्यतम की उत्तरजीविता (Survival of the Fittest):
इस संघर्ष में वही जीव जीवित रहते हैं जो अपने वातावरण के अनुरूप सबसे अधिक अनुकूलित (best adapted) होते हैं।
अयोग्य जीव धीरे-धीरे नष्ट हो जाते हैं।
(iv) प्राकृतिक चयन (Natural Selection):
प्राकृतिक चयन ही विकास की मुख्य प्रक्रिया है।
प्रकृति उन जीवों को चुनती है जिनके गुण वातावरण के अनुकूल होते हैं, और वे अपने गुण अगली पीढ़ी में स्थानांतरित कर देते हैं।
(v) नई प्रजातियों का निर्माण (Origin of New Species):
लंबे समय तक उपयोगी गुणों का संचय और अयोग्य गुणों का लोप होने से नई प्रजातियाँ बनती हैं।
4. उदाहरण (Examples):
i. गालापेगोस द्वीप के फिंच पक्षी (Finches):
डार्विन ने देखा कि इन द्वीपों पर एक ही मूल प्रजाति के पक्षियों की चोंच का आकार अलग-अलग था।
यह अंतर उनके भोजन के प्रकार और पर्यावरणीय परिस्थितियों के अनुसार विकसित हुआ था।
ii. औद्योगिक पतंगा (Industrial Melanism):
इंग्लैंड में औद्योगिक क्रांति के समय काले रंग के पतंग (moths) प्रदूषित क्षेत्रों में अधिक जीवित रहे, जबकि सफेद पतंग विलुप्त हो गए।

5. डार्विनवाद के महत्व (Significance of Darwinism):
इस सिद्धांत ने जीवों के विकास को वैज्ञानिक आधार प्रदान किया।
इसने यह बताया कि जीव स्थिर नहीं हैं, वे समय और परिस्थितियों के अनुसार बदलते रहते हैं।
डार्विन ने पहली बार प्राकृतिक चयन को विकास की प्रमुख शक्ति के रूप में प्रस्तुत किया।
6. डार्विनवाद की आलोचना (Criticism of Darwinism):
डार्विन ने वंशानुगति (Heredity) और परिवर्तन (Variation) के वैज्ञानिक कारण नहीं बताए थे।
उन्होंने यह नहीं बताया कि ये भिन्नताएँ कैसे उत्पन्न होती हैं और संतानों में कैसे पहुँचती हैं।
आधुनिक आनुवंशिकी (Genetics) के उदय के बाद यह स्पष्ट हुआ कि विकास जीन (genes) में होने वाले म्यूटेशन (mutation) और पुनर्संयोजन (recombination) से होता है।
7. आधुनिक विकास सिद्धांत (Modern Theory of Evolution / Neo-Darwinism):
आधुनिक वैज्ञानिकों ने डार्विन के विचारों को आनुवंशिकी के साथ मिलाकर नव-डार्विनवाद (Neo-Darwinism) का निर्माण किया।
इसमें डार्विन के प्राकृतिक चयन के सिद्धांत को जीन, उत्परिवर्तन (mutation) और आनुवंशिक पुनर्संयोजन (genetic recombination) की अवधारणाओं से जोड़ा गया।
8. निष्कर्ष (Conclusion):
डार्विनवाद ने यह सिद्ध किया कि विकास एक क्रमिक (gradual) और प्राकृतिक प्रक्रिया है, जिसमें किसी भी प्रकार की चमत्कारिक शक्ति का हस्तक्षेप नहीं है।
इस सिद्धांत ने जीवविज्ञान की दिशा बदल दी और यह दिखाया कि —
"प्रकृति में जीवों का अस्तित्व निरंतर प्रतिस्पर्धा, अनुकूलन और चयन की प्रक्रिया से बना रहता है।"